न्यूज डायरी

अफगानिस्तान जीत लिया पर पहली महिला मेयर को डरा नहीं सका तालिबान

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) काबुल। अफगानिस्तान में हो रहे बदलाव वहां के लोगों पर भी असर डाल रहे हैं। कुछ ऐसा ही हुआ है वहां की पहली महिला मेयर जरीफा गफारी के साथ। देश पर तालिबान पर कब्जे के बाद वह यहां के हालात को लेकर बहुत ज्यादा चिंतित हैं। अब जरीफा ने तालिबान को खुला चैलेंज दिया है। उन्होंने कहा है कि मैं इंतजार कर रही हूं कि तालिबान आएं और मुझे व मेरे जैसे अन्य लोगों को मार डालें। जरीफा ने यह बात आई न्यूज वेबसाइट के साथ बातचीत में कही है। आई न्यूज वेबसाइट ने बताया कि एक सप्ताह पहले जब जरीफा ने उनसे बात की थी तो उन्हें अपने देश का भविष्य बेहतर नजर आ रहा था। लेकिन बदलते हालात में उन्होंने उम्मीद खो दी है। जरीफा ने कहा कि वह अपने अपार्टमेंट के कमरे में बैठी हैं और तालिबान का इंतजार कर रही हैं। उन्होंने कहा कि यहां मेरी या मेरे परिवार की मदद करने वाला कोई नहीं है। मैं अपने परिवार और पति के साथ बैठी हूं।

मलाला यूसुफजई ने अफगानिस्तान हालात पर जताई चिंता

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) इस्लामाबाद। नोबेल पुरस्कार विजेता मलाला यूसुफजई ने अफगानिस्तान हालात पर चिंता जताई है। विशेष तौर पर महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा को लेकर मलाला बेहद चिंतित हैं। मलाला ने संकट के इस समय अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन समेत दुनिया के तमाम नेताओं को तत्काल कार्रवाई करने का आह्वान किया है। इसके अलावा मलाला ने पाकिस्तान प्रधानमंत्री इमरान खान को एक पत्र भेजकर अफगान शरणार्थियों को स्वीकार करने को कहा है। साथ ही सभी शरणार्थियों में शामिल बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा और को लेकर भी लिखा। बता दें कि पाकिस्तान प्रधानमंत्री इमरान खान और चीन ने तालिबान को खुला समर्थन किया है। यूसुफजई ने कहा कि अफगानिस्तान के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति को अभी बहुत कुछ करना है।

ताइवान में तैनात अमेरिकी सैनिकों की गलत जानकारी ट्वीट कर बुरे फंसे यूएस सीनेटर

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वॉशिंगटन। अफगानिस्तान से लौटते अमेरिकी सैनिक इन दिनों वैश्विक सुर्खियों का हिस्सा बने हुए हैं। काबुल पर तालिबान के कब्जे और लगातार बिगड़ रही स्थितियों के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति ने अफगानिस्तान में 6000 सैनिक तैनात करने के आदेश जारी किए हैं। सैनिकों की तैनाती अमेरिकी कर्मचारियों और सहयोगियों की सुरक्षित वापसी को सुनिश्चित करने के लिए की गई है। सैनिकों का एक और आंकड़ा मंगलवार को सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। यह आंकड़ा शेयर किया अमेरिका से टेक्सास के सीनेटर ने। उन्होंने अलग–अलग देशों में तैनात अमेरिकी सैनिकों की संख्या ट्विटर पर शेयर की लेकिन इस दौरान उन्होंने एक गलती हो गई। सीनेटर जॉन कॉर्निन के ट्वीट के अनुसार ताइवान में अमेरिका के 30,000 सैनिक तैनात हैं जबकि ऐसा नहीं है।

ब्रिटिश सेनाओं का अफगानिस्तान लौटना उनकी योजना का हिस्सा नहीं

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) लंदन। तालिबान के काबुल पर कब्जा कर लेने के बाद ब्रिटेन के रक्षा मंत्री बेन वालिस ने कहा कि ब्रिटिश सेनाओं का अफगानिस्तान लौटना उनकी योजना का हिस्सा नहीं है। दूसरी ओर, विदेश मंत्री डामिनिक राब ने कहा कि ब्रिटेन ने तालिबान को आगाह किया कि वह अपने देश को आतंकवाद की भूमि न बनाए। साथ ही पश्चिमी देश उन आतंकियों को सकारात्मक तरीके से प्रभावित करने का प्रयास करें। स्काई न्यूज चैनल के यह पूछने पर कि क्या ब्रिटेन और नाटो की सेनाएं अफगानिस्तान वापस लौटेंगी, वालिस ने कहा कि यह हमारी योजना का हिस्सा नहीं है। हम वापस जाने के लिए नहीं लौट रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह अफगानिस्तान से ब्रिटिश नागरिकों और ब्रिटेन से जुड़े अफगानों को निकालने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। हमारी कोशिश रहेगी कि प्रतिदिन 1200 से 1500 लोगों को अपने विमानों की क्षमता के अनुसार ले जाया जा सके। हम इस गति को बनाए रखेंगे।

अफगानिस्तान की नई सरकार में महिलाओं को भी होगी शामिल

अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद हालात बेहद खराब

चिंताजनक

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

काबुल। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद हालात बेहद खराब हैं। लोग किसी भी तरह बस देश से बाहर जाना चाहते हैं। भारत और अमेरिका समेत ज्यादातर देशों ने अपने राजदूतों को वापस बुला लिया है। इस बीच तालिबान ने बड़ा ऐलान करते हुए महिलाओं से अफगानिस्तान की नई सरकार में शामिल होने का आग्रह किया है। इसके साथ ही तालिबान ने पूरे अफगानिस्तान में आम माफी की घोषणा की है।

तालिबान के सांस्कृतिक आयोग के सदस्य इनामुल्ला समनगनी ने पहली बार संघीय स्तर पर शासन की ओर से टिप्पणी की है। काबुल में उत्पीड़न या लड़ाई की बड़ी घटना अबतक दर्ज नहीं की गई है और तालिबान द्वारा जेलों पर कब्जा कर कैदियों को छुड़ाने एवं हथियारों को लूटने की घटना के बाद कई शहरी घरों में मौजूद हैं, लेकिन भयभीत हैं।

इस बीच, मंगलवार को नाटो के

अफगानिस्तान में वरिष्ठ नागरिक प्रतिनिधि स्टीफेनो पोंटेकार्वो ने वीडियो पोस्ट किया है जिसमें दिख रहा है कि हवाई अड्डे की उड़ान पट्टी खाली है और अमेरिकी सैनिक तैनात हैं। तस्वीर में चौन से बनी सुरक्षा दीवार के पीछे सेना का मालवाहक विमान को देखा जा सकता है।

बता दें कि सोमवार को युद्धग्रस्त देश से निकलने की कोशिश कर रहे सैकड़ों लोग सोमवार को काबुल हवाईअड्डे पर एकत्र हो गये, जहां अफरा–तफरी मचने से कम से कम सात लोगों की मौत हो गई। मृतकों में तीन अफगान नागरिक भी शामिल हैं, जो अमेरिकी वायुसेना के एक विमान से लटक गये थे। अमेरिका समर्थित अफगान सरकार के गिरने और राष्ट्रपति अशरफ गनी के देश छोड़ कर जाने के बाद तालिबान लड़ाकों के रविवार को काबुल में प्रवेश करने के साथ दो दशक लंबा वह अभियान खत्म हो गया, जिसके तहत अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने युद्धग्रस्त देश में बदलाव लाने की कोशिश की थी।

क्या है तालिबान?: तालिबान शब्द का पश्तून में मतलब होता है 'छात्र' और इससे संगठन के सदस्यों की ओर इशारा किया जा रहा था जिन्हें मुल्ला मोहम्मद उमर का 'छात्र' माना गया। साल 1994 में उमर ने कंधार में तालिबान को बनाया था। तब उसके पास 50 समर्थक थे जो सोवियत काल के बाद गृहयुद्ध के दौरान अस्थिरता, अपराध और भ्रष्टाचार में बर्बाद होते अफगानिस्तान को संवारना चाहते थे। विदेश मामलों के जानकार कमर आगा बताते हैं कि तालिबान बहुत बड़ा गुट है जिसकी काउंसिल क्वेटा शूरा का हेडक्वॉर्टर पाकिस्तान के क्वेटा में है जो बलूचिस्तान की राजधानी है। संगठन के सारे लीडर वहीं रहते हैं और वहीं मिलते हैं।

अफगानिस्तान में कैसे फैला?: सितंबर 1995 में तालिबान ने ईरान से लगे हेरात पर कब्जा किया और फिर अगले साल 1996 के दौरान कंधार को अपने नियंत्रण में लिया और राजधानी काबुल पर कब्जा कर लिया। इसके साथ ही राष्ट्रपति बुरहानुद्दीन रब्बानी को कुर्सी से हटा दिया।

अफगानिस्तान में गनी से बेहतर है तालिबान का राज

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) मास्को। काबुल पर कब्जा होते ही पाकिस्तान के बाद रूस दूसरा देश है, जो तालिबान का गुणगान करते नहीं थक रहा। रूस ने कहा है कि अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के हालात अशरफ गनी के शासन से बेहतर तालिबान के राज में है। रूस के अफगानिस्तान में राजदूत दिमित्री झिरनोव ने कहा कि तालिबान के काबुल पर कब्जे के एक दिन बाद स्थितियों को देखकर मैं समझता हूं कि यहां हालात बेहतर हुए हैं। गनी के शासन से तुलना की जाए तो बहुत सुधार हो रहा है। रूसी राजदूत ने यह बात रूस के एक रेडियो को दिए साक्षात्कार में कही। ज्ञात हो कि रविवार को ही तालिबान ने अफगानिस्तान की राजधानी काबुल पर कब्जा किया है। राष्ट्रपति पैलेस में घुसने के बाद तालिबान ने पूरे अफगानिस्तान को नियंत्रण में करने की घोषणा की थी। रूस के दूतावास ने ही यह जानकारी दी थी कि एक हेलीकाप्टर और चार गाड़ियों में कैश भरकर अशरफ गनी अफगानिस्तान से भागे हैं।

रूस के दूतावास ने सबसे पहले तालिबान से संपर्क किया। यही नहीं तालिबान के समन्वयकों से रूसी राजदूत की सबसे पहले मुलाकात हुई है। अफगानिस्तान में तालिबान कब्जे के बाद अफरा–तफरी मची हुई है।

लाहौर में एक बार फिर तोड़ी गई महाराजा रणजीत सिंह की मूर्ति

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) लाहौर। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की निशानियां तक कट्टरपंथी संगठनों के निशानों पर रहती हैं। इसका हालिया उदाहरण लाहौर में देखने को मिला है। यहां मशहूर लाहौर किले में स्थापित महाराजा रणजीत सिंह की मूर्ति पर शुक्रवार को एक बार फिर हमला किया गया। आरोप है कि यह हमला देश में प्रतिबंधित तहरीक–ए–लब्बैक कट्टर इस्लामिक संगठन ने किया है। इस मूर्ति पर किया गया यह तीसरा हमला है। रिपोर्ट्स के मुताबिक हमला TLP के लोगों ने किया है। हालांकि, उनकी पहचान अभी सामने नहीं आई है। हालांकि, जब तक वह ज्यादा नुकसान पहुंचाता, दूसरे लोग आ गए और उसे रोक दिया गया।

अमेरिका ने अफगान सेना पर खर्च किए अरबों डॉलर, अब तालिबान को मिला फायदा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

वॉशिंगटन। शायद ही किसी ने सोचा था कि दो दशक में 83 अरब अमेरिकी डॉलर की लागत से तैयार और प्रशिक्षित अफगान सुरक्षा बलों के पांव तालिबान के सामने इतनी तेजी से पूरी तरह उखड़ जाएंगे। कई मामलों में तो अफगान सुरक्षा बलों की तरफ से एक गोली तक नहीं चलाई गई। ऐसे में सवाल उठता है कि अमेरिका के इस भारी–भरकम निवेश का फायदा किसे मिला, जवाब है तालिबान। उन्होंने अफगानिस्तान में सिर्फ राजनीतिक सत्ता पर ही कब्जा नहीं जमाया, उन्होंने अमेरिका से आए हथियार, गोलाबारूद, हेलिकॉप्टर आदि भी

तालिबान के पास पहुंच गए हथियार

अपने कब्जे में ले लिए। तालिबान ने जब जिला केंद्रों की रक्षा में नाकाम अफगान बलों को रौंदा तो उनके साथ ही उनके आधुनिक सैन्य उपकरण व साजो–सामान पर भी कब्जा कर लिया। तालिबान को सबसे बड़ा फायदा तब हुआ जब प्रांतीय राजधानियों और सैन्य ठिकानों पर चौंकाने वाली गति से कब्जा करने के बाद उसकी पहुंच लड़ाकू विमानों तक हो गई। सप्ताहांत तक उसके पास काबुल का नियंत्रण भी आ गया।

अमेरिका के एक अधिकारी ने इस बात की पुष्टि की कि तालिबान के पास अमेरिका द्वारा अफगानिस्तान में आपूर्ति किए गए हथियार व उपकरण अचानक बड़ी मात्रा में पहुंच गए हैं। यह अमेरिकी सेना और खुफिया एजेंसियों द्वारा अफगान सरकारी बलों की जीवटता को गलत तरीके से समझने के शर्मनाक परिणाम हैं। अफगान बलों ने तो कुछ मामलों में लड़ाई के बजाए अपने हथियारों और वाहनों के साथ आत्मसमर्पण करने का विकल्प चुना।

एक स्थायी अफगान सेना और पुलिस बल तैयार करने में अमेरिका की विफलता और उनके पतन के कारणों का सैन्य विश्लेषकों द्वारा वर्षों तक अध्ययन किया जाएगा। बुनियादी आयाम हालांकि स्पष्ट हैं और जो इराक में हुआ उससे ज्यादा जुदा भी नहीं हैं।

बिना पीसीआर टेस्ट के नहीं कर पाएंगे भारत से यूएई की यात्रा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) अबू धाबी। संयुक्त अरब अमीरात की सरकार ने मंगलवार को देश में प्रवेश करने वाले यात्रियों के लिए नए दिशा–निर्देश जारी किए हैं। नए नियमों के अनुसार भारत, पाकिस्तान, नाइजीरिया, श्रीलंका और नेपाल के यात्रियों को यूएई की यात्रा करने के लिए पीसीआर टेस्ट से गुजरना होगा। यह नियम आज से लागू हो गया है। यूएई ने यात्रियों से पीसीआर रैपिड टेस्ट से गुजरने के लिए उड़ान के लिए निर्धारित समय से छह घंटे पहले एयरपोर्ट आने के लिए कहा है। यूएई ने 3 अगस्त को घोषणा की थी कि वह वर्तमान में भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, नाइजीरिया और युगांडा में रेजिडेंट वीजा धारकों को 5 अगस्त से देश में लौटने की अनुमति देगा। इससे पहले यात्रियों को समय से चार घंटा पहले एयरपोर्ट पहुंचने के लिए कहा गया था। यूएई सरकार की ओर से जारी नोटिफिकेशन में सभी एयरलाइन्स से नए दिशा–निर्देशों का पालन करने के अपील की गई है।